रस शास्त्र का इतिहास एवं विकास

वेदों में विशेषतः अथर्ववेद से प्रवाहित रसधारा (रसविद्या) का विकास बौद्धों के महायान मतानुयायियों द्वारा हुआ | गुप्तकाल में रसविद्या विकसित रूप में थी | अष्टांग सं. काल (6वीं शत.) के अंतिम चरण में रसविद्या का विकास प्रारम्भ हुआ, 10वीं शत.में कुछ ही विकास हुआ किन्तु 16वी शत.(पद्मावत काल) तक पूर्ण विकास हो चुका था |

वस्तुतः 8वीं शत. में यह विद्या चरमोत्कर्ष पर रही इस काल में धातुवेध (लौहसिद्धि), देहवेध (देहसिद्धि) आदि क्रियाएं पचलित एवं विकसित हो चुकी थीं | रस सिद्धि या रस चिकित्सा के प्रवर्तक **सिद्ध** कहलाते थे, इनमें 84 सिद्धों का वर्णन मिलता है, ये प्रायः नाथ सम्प्रदाय एवं कुछ बौद्ध सम्प्रदाय से सम्बंधित थे | समस्त नाथ सम्प्रदाय शैव मतानुयायी था | इस सम्प्रदाय में प्रारम्भ में लौसिद्धि के पश्चात देहसिद्धि का ज्ञान कर शरीर को अजर-अमर करने के लिए रस प्रयोग होने लगा | पारद (रस) का अन्तः प्रयोग (औषध रूप में) इन्होंने ही आरम्भ किया | इनमे भी कुछ प्रमुख सिद्धों के नाम हैं- **आदिनाथ (रूद्र), गोरक्षनाथ, नागार्जुन (द्वितीय), नित्यानंद, कपालि, चंद्रसेन** आदि | इनमें से रस शास्त्र के विकास स्तम्भ रूप में नागार्जुन (द्वितीय) ही हैं जिन्हें '**सिद्धनागार्जुन**' के नाम से जाना जाता है, इनका जन्म विदर्भ प्रांत के कांचीनगर में हुआ |

Dr. SHARAD GAUTAM

आयुर्वेद में दो परम्पराओं का उल्लेख मिलता है-

1. **वेद परम्परा** एवं
2. **आयुर्वेद वाङ्गमय परम्परा (संहिता)**

- वेद परम्परा में रूद्र को प्रथम भिषक या आद्य चिकित्सक कहा गया है- **प्रथमो देव्यो भिषक्** (यजुर्वेद 16/5)
- आयुर्वेद वाङ्गमय परम्परा में ब्रम्हा को आयुर्वेद का प्रथम उपदेष्टा माना गया है
- वेदों की तरह रस ग्रंथों में भी भगवान् शिव (रूद्र) को रस विद्या का प्रथम उपदेष्टा माना गया है
- रसायन विद्या (रसविद्या) का प्रचार वैदिक युग से चला आ रहा है

- वेदों में चतुर्विध चिकित्सा का वर्णन मिलता है-
  1. आथर्वणी – (दिव्य औषधियों एवं मन्त्रों द्वारा)
  2. आंगीरसी - (दिव्य औषधियों एवं मन्त्रों द्वारा)
  3. दैवी - (रस चिकित्सा प्रधान, शिव आदि दिव्य चिकित्सकों का वर्णन)
  4. मनुष्यजा – (काष्ठौषध प्रधान)

- रस पद्धिति में त्रिविध चिकित्सा का वर्णन मिलता है-
  1. दैवी – रस, महारस, उपरस आदि के द्वारा चिकित्सा (देहसिद्धि)
  2. मानुषी – वन्यौषधि या काष्ठौषध प्रधान चिकित्सा
  3. आसुरी – तंत्र-मन्त्र द्वारा चिकित्सा
- रस शस्त्र के विकास को उपलब्ध साहित्य का काल के आधार पर विभाजन कर के समझा जा सकता है –
  1. वैदिक काल (वेद, उपनिषद, आरण्यक, ब्राह्मण, ग्राहासूत्र आदि साहित्य)
  2. संहिता काल (चरक सं, सुश्रुत सं, आदि)
  3. संग्रह काल (9वीं से 15वीं शत. तक)
  4. आधुनिक काल (16वीं शत. से वर्तमान काल)

Dr. SHARAD GAUTAM